MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue Oct-2018

Vidyawarta®

International Multilingual Refereed Research Journal

2nd International Conference on

Dialoguing Borders : Vital Issues in Humanities, Commerce, IT and Management

6th - 7th October 2018

◆ Chief Editors ◆

Dr.D.N.Ganjewar

Dr.S.K.Sarje

Scanned with CamScanner

83) "सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियों में चित्रित नारीयाँ" ||298
प्रा. डॉ. विजय गजानन गुरव

84) लिंगधारी समाज की विषम व्यवस्था की दांसताघ ||302
प्रा.श्रीमती पोटकले हिरा तुकाराम

85) राजर्षी शाहू महाराज यांची आरक्षण विषयक भूमिका ||304
प्रा. मदन कचरू मगरे

86) आधुनिक भारतातील महिला सबलीकरण ||307
प्रा. डॉ. रविंद्र पी. ठाकरे

87) Online E-learning Websites at a Glance ||313
Dnyaneshwar B. Maske, Gajanan P. Khiste

88) Fighting for Respectful Life: Candida Wilton in Margaret Drabble's ...
Dr. Neeta Bhausaheb Jadhav ||316

89) Nature-Human Relationship with Reference to Jim Corbett and Salim Ali.
Miss. Smita Bhagachand Phatangare ||320

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

You Tube Find us on YouTube

SUBSCRIBE

Vidyawarta™
International Multilingual Research Journal

Scanned with CamScanner

84

लिंगधारी समाज की विषम व्यवस्था की दांसताघ

प्रा. श्रीमती पोटकले हिरा तुकाराम
कला व विज्ञान महाविद्यालय, गेवराई जि. बीड

****

मृदुला गर्ग का वंशज यह उपन्यास लिंगधारी समाज की विषम व्यवस्था उद्घाटीत करने के साथ–साथ स्त्रियों के उत्तराधिकार के लिए संघर्ष की गाथ को प्रस्तुत करता है। बरसों से चले आ रहे सामाजिक अन्याय के सभी पन्नों को यह उपन्यास पलटता है और पुरुष प्रधान संस्कशति की विषम समाज व्यवस्था की दास्ताघ भी कहता है। लेखिका ने समाज से जुडी अनेकानेक समस्याओं जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, स्त्री–शोषण, अंधविश्वास, लिंगभेद, बलात्कार, वैवाहिक समस्याओं में अनमेल विवाह, तलाक, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा आदि का चित्रण किया है। मशदुला जी अपनी लेखनी में समस्याओं का मात्र उल्लेख ही नहीं करती बल्की अपने पात्रों के माध्यम से उनका डटकर मुकाबला भी करती है। प्रस्तुत उपन्यास में समाज के कुछ अनिष्ठ नियमों का जिळ किया है जो कभी नहीं बदलनेवाले। पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था में वारिस सिर्फ लडकों को ही बनाया जाता है। बरसों से चली आ रही रीत जिसमें लडका–लडकी में भेदभाव किया जाता है। सर्वगुण संपन्न,अदम्य साहस होने के बावजूद भी लडकी को पैतृक संपत्ति का मालिक या हिस्सेदार नहीं बनाया जाता और इसी तरह माता– पिता कि मौत पर अग्नि देने का अधिकार भी लडकों को ही रहता है।

वंशज उपन्यास में सुधीर नामक युवक के जीवन सारे मोड को प्रस्तुत करती हैं। सुधीर अंत्यत संवेदनशील है, जिसे हर कदम पर असफलता मिलती है। जज शक्ल साहब सुधीर के पिता है, जो अनुशासन और नियमों के पक्के हैं। सुधीर की एक बहन है रेवा,जो सुधीर को बहुत चाहती है। शुक्ल साहब ने जैसे संपत्ति बाघटने में पक्षपात किया वैसे ही प्यार और ममता में भी पक्षपात किसा था। रेवा को ज्यादा प्यार व सुधीर को कम और सुधीर को सारी संपत्ति व रेवा को कुछ भी नहीं। जज साहब के इस स्वभाव के कारण उनके परिवार में तणावपूर्ण वातावरण निर्माण होता है। सुधीर बचपन से जज साहब में पिता की छवि ढूँढता रहा मगर अंत तक उसे वह जज साहब ही दिखते रहे। बचपन से ही माघ और पिता का स्नेह और वात्सल्य से वंचित सुधीर का व्यक्तित्व संस्कारों के अभाव में संवलित नहीं हो पाता। बचपन से निर्मित इस नफरत और घृणा की भावना पिता पुत्र में टकराव के कारण परिवार में इस नफरत तणावग्रस्त स्थिति पैदा हो जाती है जिसके कारण और भी पारिवारिक समस्याएँ निर्माण होती है।

वंशज में लेखिका ने करारे व्यंग में लिखा है कि रेवा जो दिखने में सुंदर हैं, स्वभाव से सुशील और पिता की प्यारी बेटी है। वह जज साहब की तरह ही दिखती थी शायद इसिलिये वे रेवा से ज्यादा प्यार करते थे। सुधीर जो मातृमुखी था, पिता उसे कुछ ज्यादा ही अनुशासन में रखते थे। किंतु अचानक जी जान से प्यारी चहेती बेटी रेवा शुक्लसाहब के दिल–दिमाग से इतनी दूर हो गयी की अपनी संपत्ति,वसियत का बघटवारा करते समय उन्हें रेवा की जरा सी भी याद नहीं आई बल्कि पुरूष प्रधान संस्कृति में चल रहे नियम के अनुसार जिस बेटे को जज साहब ने एक बार भी प्यार से नहीं पुकारा उस अनचाहे बेटे सुधीर के नाम अपनी सारी संपत्ति की। रीति–रिवाजों के अनुसार अनचाहे बेटे को ही अपनी वसियत का वंशज बनाया। एक पिता ही अपनी बेटी के साथ इस प्रकार का अन्याय करेगा तो पति, ससूर और समाज से क्या अपेक्षा रखेंगे, वे तो वही करेंगे जो पिता ने किया है। वसियत का बघटवारा सुनने के बाद रेवा सोचती है– बचपन से आज तक डैडी मुझे ही ज्यादा प्यार करते आये हैं, फिर आज बचानक सुधीर इतना प्यारा कैसा हो गयाघ कि मरते वक्त डैडी ने मुझे याद तक नहीं किया। वसियत में मेरा जिळ तक नहीं किया। एक

Scanned with CamScanner

वैसा भी मेरे नाम नहीं छोडा। संदीप के सामने कितना छोटा बना दिया मुझे। (1) इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि, रेवा पिता पर और भाग्य पर खीज उठती है। लेखिका ने रेवा की मन की बात लिखकर जैसे भारतवर्ष के प्रत्येक बेटी के मन की व्यथा को सबके सामने रखा है।

परिवार में लिंग भेद के कारण ही अनेक समस्या एक जन्म लेती है। जिसका कारण है पुराने सोच विचार। लेकिन हम यह भूल जाते है कि परिवारमें स्त्री और पुरूष दोनों बराबरी के हिस्सेदार है। दोनों ही नदी के दो किनारे के रूप में है, जिनके बीच जीवन की धारा बहती है। लेखिका यहा एक बात स्पष्ट करती है कि अनमेल विवाह सिर्फ उम्र के अंतर के ही नहीं होते बल्कि विचारों के अंतर के विवाह को भी अनमेल विवाह कहते है। सुधीर और सविता का विवाह अनमेल विवाह है, क्योंकि दोनों के विचारों में कोई मेल नहीं था। सुधीर कों एक उम्मीद थी उसकी पत्नी तो उसे समझेगी मगर सविता सुधीर की पत्नी कम और जज साहब की बहू ज्यादा जघघचती थी। दिन पर दिन सविता कुछ ज्यादा ही व्यवहारिक व स्वार्थी हो गयी थी इसिलिए सुधीर इन लोगो के बीच तनावग्रस्त जीवन जीता है। दोनों के विचारों में अंतर होने के कारण सुधीर और सविता के वैवाहिक जीवन में कटुता आ जाती है। लेखिका ने सविता के द्वारा असंतुष्ट मानसिक स्थिति को स्पष्ट किया है– मेरी आंकाक्षाओं के पुर्ति के सुधीर का सुधीर होना बिल्कुल जरूरी नहीं था। मैं चाहती थी बडा घर,ऐशोआराम,समाज में इज्जत और सुरक्षित जीवन ये सब मुझे जज साहब के बदौलत मिल ही गए थे। मैं चाहती थी बच्चे– जो सुधीर ने मुझे अनजाने में दे ही दिये थे। इसके अतिरिक्त मै चाहती थी एक सबल पुरूष जो सुधीर है ही। इतनी उपलब्धियों के बावजूद भी कभी–कभी मेरी मानसिक शांति भंग कर देता है– वो है सुधीर का सुधीर होना। (2)

लेखिका ने पिता–पुत्र, पिता–पुत्री, भाई–बहन व ससूर–बहू संबधों को दर्शाया है। भाई–बहन के रिश्ते को खुबसुरती से प्रस्तुत किया है। लिंग भेद की पूरानी सोच भाई–बहन के रिश्ते में कडवाहट पैदा करती है। लडकपन में रेवा भाई से बहूत प्यार करती थी। अपने लापरवाह भाई का हर तरह से ध्यान रखती थी,वही बहन संपत्ति के लिए अपने भाई से द्वेशभाव रखकर सोचती है। सुधीर जो उम्र भर पिता से नफरत करता था,फिर भी जज साहब ने उसे ही वंशज बनाया है। बचपन से आज तक सुधीर के लिए मैं ही सब कुछ थी। मैं ही तो सुधीर की पैरवी लेकर जज साहब के पास जाती थी। सुनवाई अव्वल होगी, इस उम्मीद में और आज बिना पैरवी के सुधीर यूघध बाजी मार लेगा यह तो मैने सोचा ही नहीं था। (3) संपत्ति के बघटवारे के बाद बहन रेवा के मन में कडवाहट आती है। सुधार पैसों के प्रति लापरवाह दिखता है मगर रिश्तों के प्रति वह बहुत नेक दिल दिखाई देता है। सुधीर त्योहारों के समय भाई की जिम्मिदारिया भी निभाता है और आखिर में वसियत में से एक कोठी रेवा के नाम करने के कागजात बना लेता है। मगर सविता की कुटिल चाल से वह कागज रेवा तक नहीं पघहूच पाता। यहा तक की अपने बीमार भाई को भी सविता देखने नहीं देती और वो घर लौट जाती है। इसके कारण रेवा के मन में अपने भाई के प्रति और कडवाहट भर जाती है। सविता की लालची वृत्ति, स्वार्थी स्वभाव के कारण भाई बहन के खुबसुरत रिश्ते में दरार पैदा हो जाती है।

वशंज के माध्यम से मृदुला जी ने एक साथ अनेक सामाजिक यथार्थो को प्रस्तुत किया है। परंपरा से चली आई अनेक रूढियों, रीति–रिवाजों का तिव्र विरोध किया है। माता पिता की मृत्यू के बाद अग्नि देने का या अंतिम संस्कार करने का अधिकार लडकी को भी रहे इस बात पर जोर दिया है। लेखिका के विचारों के अनुसार कठगुलाब उपन्यास में दर्जीत बी ने अपना अंतिम संस्कार बेटी असिमा से करवाया था न कि बेटे असीम से। आज कुछ परिवारों में लडकी माता–पिता को अग्नि देती दिखाई देती है किन्तु इसका प्रमाण अत्यंत कम है। यह बात समाज में मान्य नहीं है।

कथनी और करनी में अंतर रखना, इस कहावत के अनुसार ही जजसाहब का चरित्र है। क्यों कि यू तो आधुनिकता का ढिढोंरा पिटते थे मगर आखिरी वक्त

Scanned with CamScanner

अपनी आधुनिकता को भूलकर पुरानी रीति, नियमों के अनुसार सुधीर को ही अपनी वसीयत का वंशज बनाया। चाहे उन्हों ने अपनी पूरी जिंदगीभर बेटे को नापसंद करते रहे और बहू सविता और बेटी रेवा से अच्छा बरताव करने के बावजूद भी वे औरातों की अभी भी चूल्हें–चौके तक ही सीमित रखना चाहते थे। अगर न्याय की देवता अपनी बेटी के साथ अन्याय कर सकती है तो बहू के साथ तो न्याय करने की तो हम सोच भी नहीं सकते।

इससे यह स्पष्ट है कि दिखावे के तौर पर हम कितने भी आधुनिक बन जाये हमारी सोच आज भी पुरानी है। लिंगभेद और अनिष्ठ रिती–रिवाजों को मिटाने के लिए मानसिक सोच में परिवर्तन करना आवश्यक है। अगर लडकी सर्वगुण संपन्न है,जान से भी ज्यादा प्यारी है रूप–गुण सभी है फिर भी वारिस बनाते समय हम बेटों की ही चाह रखते है, इसी मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया है। लेखिका ने वंशज के माध्यम से भारतीय समाज के खोखले रिवाजों पर करारा व्यंग्य किया है और दिखाया है कि पढ–लिखकर हम चाहे कितने भी उघचे ओहदों पर चले जाएघ चाहे पाश्चात्य देश में शिक्षा लेकर या रहकर वापस आ जाएघ हमारी सोच अभी भी बहुत पीछे है। आज भी हमारे समाज में बेटे–बेटी मे अंतर दिखाई देता है। लेखिका कहती है की मेरी पिताजी की चाह थी मेरे नाम से मशदुला नहीं बल्कि मशदुला के नाम से मैं जाना जाझ। इन्हीं विचारों की आवश्यकता हम सबको हैं जिसके कारण लिंग भेद की यह समस्या कम होते–होते खत्म हो जाएँ।

संदर्भ सूची –:

१. मृदुला गर्ग– वंशज , पृ.२३१.
२. मृदुला गर्ग– वंशज, पृ.११९.
३. मृदुला गर्ग– वंशज, पृ.२३१.

❑❑❑

Scanned with CamScanner